नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो.9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

पत्रांक : .....

दिनांक : 24.01.2019

प्रकाशनार्थ

भारत–भारती पखवारा के अन्तर्गत महाराणा प्रताप स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जंगल धूसड़, गोरखपुर के **बी0एड्0 विभाग** द्वारा आयोजित 'क्रियात्मक अनुसंधान' विषय पर व्याख्यान देते हुए **शिक्षा शास्त्र विभाग, प्रो0 राजेश सिंह**, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय ने कहा कि मानव ज्ञान के विकास के लिए अनुसंधान आवश्यक है। क्रियात्मक अनुंसधान शिक्षक, प्राचार्य, प्रशासक, प्रबन्धक निर्देशक, निरीक्षक अथवा विद्यालय कर्मचारियों के द्वारा, विद्यालय की समस्या को सुलझाने के लिए किया जाता है। क्रियात्मक अनुसंधान का लक्ष्य संस्था की प्रगति एवं विकास करना है। यह कक्षा तथा विद्यालय में उठने वाली समस्याओं का एक समाधान है। क्रियात्मक शोध के माध्यम से शिक्षक अपने स्तर पर भी शैक्षणिक कार्य में आने वाली समस्याओं का समुचित समाधान कर सकते हैं जिससे विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। क्रियात्मक शोध के द्वारा शिक्षण कार्य के दौरान समस्या का चयन व समाधान की दिशा में कार्य किया जाता है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य यह है कि सभी क्रियात्मक शोध के प्रति जागरूक हों। कार्यक्रम का संचालन बी0एड्0 प्रथम वर्ष की छात्राध्यापिका नेहा पासवान ने किया आभार ज्ञापन बी0एड्0 प्रभारी श्रीमती शिप्रा सिंह ने किया। इस व्याख्यान कार्यक्रम में बी0एड्0 प्रथम वर्ष के 42 विद्यार्थी एवं बी0एड्0 द्वितीय वर्ष के 56 विद्यार्थी उपस्थित रहे। इस अवसर पर बी0एड्0 विभाग के प्रवक्ता श्रीमती पुष्पा निषाद, डॉ0 अनुभा श्रीवास्तव, श्रीमती साधना सिंह, सुश्री रचना सिंह, सुश्री दीप्ती गुप्ता, सुश्री श्वेता चौबे, श्रीमती विभा सिंह उपस्थित रही।

भारत–भारती पखवारा के अन्तर्गत **अंग्रेजी विभाग** द्वारा आयोजित अतिथि व्याख्यान में दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय **अंग्रेजी विभाग की सुश्री विभा पाण्डेय** ने रेनेसा पीरियड का अंग्रेजी साहित्य में महत्व विषय पर बोलते हुए कहा कि पुर्नजागरण काल से पहले साहित्य का सृजन केवल लैटिन एवं यूनानी भाषा में ही होता था। पुर्नजागरण काल में देशी भाषाओं में साहित्य लिखा गया, जिससे साहित्य का व्यापक प्रसार हुआ। इसी काल के सभी क्षेत्रों स्थापना–कला, मूर्तिकला, चित्रकला एवं संगीत में प्राचीनतम आदर्श अपनाने के साथ ही साहित्य पर भी प्राचीन की छाप दिखाई देती है। इस काल मे बाइबिल का अनुवाद, भौगोलिक खोजे तथा वैज्ञानिक जगत में अपने महान अन्वेषणों द्वारा अपूर्व एवं महान क्रांति उत्पन्न कर दी। सोलहवीं शताब्दी में 'खगोल विद्या' ने 'प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृति से प्रेरणा प्राप्त कर कॉपरनिकस थ्योरी की भी शुरूआत की। विलियम कास्टॉन ने वैज्ञानिक धारा की प्रवाहित किया। इसी

नैक द्वारा प्रत्यायित श्रेणी ''बी''

महाराणाप्रतापस्नातकोत्तरमहाविद्यालय

जंगल धूसड़-गोरखपुर

फोन नं0 : 0551–6827552, 2105416

मो.9794299451

Website: www.mpm.edu.in

E-mail : mpmpg5@gmail.com

स्थापित २००५ ई.

काल में लोगो में ज्ञान पिपासा के साथ–साथ सौन्दर्य के प्रति प्रेम, देशभक्ति की भावना, धन तथा सम्पदा के साथ–साथ ज्वेलर्स के प्रति प्रेम जागृत किया। बिना शक के इस समय के प्रमुख लेखकों जैसे सिडनी, स्पेन्सर, शेक्सपीयर, फ्रांसीसी बेकल, जॉन डल, जॉन मिल्टन, थॉमस नशे, क्रिस्टोफर मारलो, हेनरी, थॉमस कैड, सर थॉमस वेट और सर थॉमस मोरे शामिल है। व्याख्यान का संचालन बी0ए0 प्रथम वर्ष के सर्वेश्वर कांत चंद्रा तथा आभार ज्ञापन अंग्रेजी विभाग प्रभारी श्रीमती कविता मन्ध्यान ने किया। इस अवसर पर अंग्रेजी विभाग के विद्यार्थी भी उपस्थित रहे।

भारत–भारती पखवारा के अन्तर्गत **सांस्कृतिक विभाग** द्वारा हमारा महाविद्यालय विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ0 प्रज्ञेश कुमार मिश्र ने बताया कि बी0ए0 तृतीय वर्ष की सुश्री सृष्टि श्रीवास्तव को प्रथम, बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष की महिमा विश्वकर्मा को द्वितीय, बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष की खुशी सिंह को तृतीय एवं बी0एस–सी0 प्रथम वर्ष की फरहीन खातून को सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त हुआ। कार्यक्रम के निर्णायक के रूप में डॉ0 अभिषेक सिंह तथा डॉ0 वेंकट रमन पाण्डेय ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

भारत–भारती पखवारा के अन्तर्गत **समाज शास्त्र विभाग** द्वारा गोरखपुर के विकास में सरकार और जनभागीदारी विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम संयोजक डॉ0 हनुमान प्रसाद उपाध्याय ने बताया कि बी0ए0 तृतीय वर्ष के राहुल गिरि को प्रथम स्थान, बी0ए0 प्रथम वर्ष के सत्यप्रकाश तिवारी एवं अंकित कुमार पाण्डेय को द्वितीय स्थान, बी0ए0 द्वितीय वर्ष के विशाल कुमार दूबे को तृतीय स्थान तथा बी0ए0 प्रथम वर्ष के प्रकाश पाण्डेय ने सान्त्वना पुरस्कार प्राप्त किया। कार्यक्रम में डॉ0 महेन्द्र प्रताप सिंह, श्रीमती विभा सिंह ने निर्णायक मण्डल के रूप में अपना योगदान दिया। कार्यक्रम 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

(डॉ0 राजेश शुक्ल)
सूचना एवं जनसंपर्क अधिकारी